संपादकीय

भाषायी समाज के रूप में हिन्दी की सत्ता एक सामाजिक यथार्थ है जिसे इतिहास चक्र ने बोलियों के वंशानुक्रम के संबंध का अतिक्रमण कर एक निश्चित अर्थवत्ता प्रदान की है। इसका कारण है – भाषा का, हमारी सामाजिक अस्मिता का सशक्त माध्यम होना। भाषा एक समाज के लोगों को भावना, चिंतन और दर्शन की दृष्टि से परस्पर जोड़ती है, और 'मैं' का 'हम' समुदाय के विस्तार का साधन बनती है। यही नहीं सामाजिक अस्मिता के रूप में भाषा का सिद्ध होना ही उसे समाज को तोड़ने-जोड़ने की शक्ति देता है क्योंकि यह एक साथ अपनी 'आभ्यंतर एकता' और 'बाह्य विशिष्टता' दोनों को साधती है तो वहीं दूसरी ओर यह क्षेत्र, विविध क्षेत्रीय समाज के रूप में एक विशिष्ट इकाई भी सिद्ध होता है। भारतीय बहुभाषिक संदर्भ भाषा के माध्यम से एक ओर क्षेत्रीय रंग लाने के साथ समुदाय विशेष की भावात्मक एकता और अन्य समुदायों से उसका विद्वेष दोनों को ही सिद्ध करता है जिसके कारण यही भाषा शिक्षित-अशिक्षित, स्त्री-पुरूष,उच्च-मध्य-निम्न वर्ग आदि सभी को जोड़ या उकसा सकती है। इस कड़ी में साहित्य की अतूलनीय भूमिका होती है। साहित्य संवेदना के धरातल पर मानव को जोड़कर उन्हें उचित-अनुचित का बोध कराती है साथ ही आत्मचिंतन और शोधन की ओर उत्प्रेरित करते हुए अंतत: एक सुनिश्चित दिशा प्रदान करती है।

आज साहित्य और भाषा नये तकनीकी के माध्यम से नव्य स्वरूप सहित पाठकों के संसर्ग में है। उसी का एक माध्यम है पत्रिका। पत्रिका का कलेवर और विषय सामग्री परिवर्तित समय के साथ बदलता रहा है। देश भर में कई साहित्यिक और राजनीतिक अथवा औद्योगिक पत्रिकाओं का अपना विशिष्ट स्थान उनके अपने क्षेत्र में है। अलायंस विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य विभाग की ओर से प्रकाशित 'अनुकर्ष' (त्रिभाषी, त्रैमासिक ई – पत्रिका) का सार्थक उद्देश्य इस बात में निहित है कि इसके माध्यम से भाषाओं का प्रचार – प्रसार व्यापक रूप में हो सके। हिन्दी,अङ्ग्रेज़ी और अन्य भाषा को संवर्धित करने का लक्ष्य लिए इस पत्रिका को सफलता तभी मिलेगी जब लेखक, अनुसंधाता, पाठक, शोधार्थी और छात्रों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। सितंबर में प्रारम्भ होने के खातिर 'अनुकर्ष' का प्रवेशांक हिन्दी में आ रहा है। अंक में जितने भी लेख संकलित हैं उन सभी लेखकों और कवियों का सादर धन्यवाद। पत्रिका को अखिल स्तर पर स्थापित करने में पाठकों के सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ॰ अनुपमा तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी